خط کتابت أردؤ کورس کی

ووسری کتاب

رمعيار ٢ تا ٢ جاءت ١

مجلسرادارت

پروفیسر محمد مجیب عبرالله ولی مخش قادری محمد فارد محمد فاکر عبدالغقار مدمولی

خطركتا بت أرد وكورك

۱. جا معدرتید اسلامید جامع گرنئ دہلی کے جشن زریس انتظام کی مؤقع پراس کورس کے استظام کی ابتدا کی گئی ہے

۲ اس کورس کا مقصد مختلف زبانوں کے ذریعے خطاکتابت کے سہارے اُردؤ کی ابتدائی تعلیم دینا ہے

مع. توقع کی جاتی ہے: کر سیکھنے والا عام فہم أردؤ بول سكتا ہو اور سمجھ سكتا ہو۔

م سیکھنے والے کے بے ضروری ہے کہ وہ کوئی ایک زبان برده سکتا ہو۔

٥. في الحال بندى اور كے ذريع تعليم دينے كا إنتظام كيا كيا بيد

ای کے نصاب کے مطابق کتا ہیں نیار کی کئی ہیں، شرکت کے توا عدیہ ہیں :

قواعرشركت

ا ۔ جولوگ جمارے دفترے خط كتابت كے ذريعے ربط قائم ركھ كرتعليم پانا چاہيں وہ ہمارے إقاعدہ زكن رطاب علم ،كہلانيں گے۔

ا نے اراکین کو داخلہ فارم بھرنے کے بعد اس نصاب اکوری ، کی کتا ہیں ایک ایک کے گئے میں ایک ایک کے گئے مفت دی جانیں گی۔ اس تعلیم کی فیس بھی نہیں ہے لیکن پورے کوری کی ڈاک اور کتا بیں بھیجنے کا خرج دوروپے ہے جو پوسٹل ارڈر یا منی آرڈرکے ذریعے آنا جا ہیے۔

١٠ خط بكفة وقت دافل نمبركا حواله ديا كيجي

۳- جو لوگ ہارے دفترے ربط قائم کے بغیر ہماری کتابوں سے استفارہ گرا جائیں تو وہ مکتبہ جا معہ لمیٹ جا بود گرنٹی دہی الاسم عردہ تیرت پریکتا ہیں حاصل کر سکتے بیں۔

٥- فصاب تعليم اور دافل فارم حاصل كرف كا پته يه بن :

ناظم خطاکنابت اُرد فیکورس جامعه نیه إسلامیه جامعه نگرنی دنجا

ख़त किताबत उर्दू कोर्स

- १. जामिश्रा मिल्लिया इस्लामिया, जामिश्रा नगर, नई दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती समारोह (१६७०) के अवसर पर इस कोर्स की व्यवस्था करने की शुरुआत की गई ।
- इस कोर्स का उद्देश्य विभिन्न भाषात्रों के द्वारा खत के सहारे उर्द् की प्रारम्भिक शिक्षा देना है।
- सीखने वाले के लिए जरूरी है कि वह कोई एक माषा लिख पढ़ सकता हो।
- ४. श्रमी केवल हिन्दी श्रौर ... के द्वारा उर्दू शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है। इस उद्देश्य के लिए 'रहनुमा' का प्रकाशन किया गया है।
- इस के पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकों तैयार की गई हैं। प्रवेश के नियम ये हैं।

प्रवेश के नियम

- जो लोग हमारे दफ़्तर से खत किताबत के सहारे हम से सम्बन्ध स्थापित कर के शिक्षा पाना चाहें वह हमारे बाकायदा सदस्य (विद्यार्थी) कहलाएेंगे।
- ऐसे सदस्यों को प्रवेश-पत्र भरने के बाद इस कोर्स की किताब एक-एक कर के मुपत दी जायेंगी। इस शिक्षा की फीस भी नहीं है, परन्तु पूरे कोर्स की डाक ग्रीर पुस्तकें भेजने का खर्च २ रुपये है जो प्रवेश पत्र के साथ पोस्टल ग्रार्डर या मनिग्रार्डर द्वारा ग्राना चाहिये।
- प्रवेश होने के बाद पत्र लिखते समय प्रवेश संख्या का हवाला दिया की जिये।
- ४. जो लोग हमारे दक्षतर से सम्बन्ध स्थापित किए बिना हमारी पुस्तकों से लाभ उठाना चाहें तो वे 'मकतबा जामिग्रा लिमिटेड' नई देहली न० २५ से निश्चित मूल्य पर ये पुस्तकों ले सकते हैं।
- ५. पाठ्यक्रम और प्रवेश-पत्र प्राप्त करने का पता ये है:

नाजिम

कृत कितावत उर्दू कोस जामिया मिन्लिया इस्लामिया जामिया नगर, नई दिन्ली-२५

خط کتابت اُردؤ کورس کی

دوسری کاب

(معیار ۲ تا ۲ جاعت)

مجلس ادارت پروفیسرممد مجیب عبدالله ولی بخش قادری محد ذاکر عبدالغقار مد بولی

三, 2 2

خطركابت أردؤكورس

- (۱) جامِعه مِلّيه إسلامِيه جامِع نگر- نئي و بلي ٢٥
- (٢) مكتبر جامِعه لمينة جامِعه نگر نئي دېلي ٢٥

ज्यलामतं

इस पुस्तक में ग्रनजुमन तरक़क़ी उर्दू हिन्द की स्वीकृत ग्रलामतें हैं जिन का प्रयोग एक समय से जामिग्रा मिल्लिया में हो रहा है (देखिये रिसाला उर्दू माह अक्तूबर १६०३ ई०)

म्र	1
T	t
f	,
7	ی ہے
2	2 4
<u>Z</u>	22
•	و
ø.	ؤ
î.	,
4	ĵ
·	ن خ

اگست ۱۹۷۱ء

تاريخ إشاعت

ایک بزار

بادِاوَل

کورس سے بامر والوں کے لیے قیمت ۵۰-۱

نایشر ، جامعه مبلیه اسلامیه جامه نگر- ننی دبلی ۲۵ (مطبوعه جیربست بلی)

चन्द बातें

उदू ख़त कितावत की यह दूसरी किताव है। इससे पहले आप रहनुमा पढ़ चुके हैं। इस में हिन्दी के जरिये उर्दू सिखाने की कोशिश की गयी है। यब आसान आसान जुम्लों के छोटे छोटे सबको से दूसरी किताव शुरु होती है। छुछ सबक पढ़ने के बाद मशक आती है। जिस में पहले ख़ास तरह के लफ्जो को बताने और दोहराने पर जोर दिया गया है। तीन चार सबक के बाद उनसे छुछ मुश्किल सबक आते हैं। आख़िर में ऐसे सबकों पर किताब ख़तम होती है जो छोट दरजे में पढ़ने वाले उम्मन पढ़ा करते हैं।

इन सबको के एलावा नड़में भी शामिल की गयी हैं। वह भी शुरु में बहुत यासान हैं। यौर फिर निस्वतन मुश्किल होती जाती हैं। लेकिन सब में रवानी यौर लुक्क मौजूद है।

पूरी किताबत में ऐसे सबक और नज़में रखी हैं। जो बड़ी उमर के लोगों के लिये दिल्वस्प और मुफ़ीद हों। आप के सामने अन्दाज़ और बयान के लेहाज से मुख़्तिलिफ नमूने रखे गये हैं। मस्लन ख़त, दरखास्त और ड्रामा किताब के आख़िरी हिस्से में चन्द मशहूर शाएरों की गजलों से जुन कर शेर दर्ज किये गये हैं। आप जानते हैं कि गजल को किस क़दर पसन्द किया जाता है। यहां ऐसे शेर लिये गये हैं जो पढ़ने में आसान हैं। लेकिन उन में जबान का मजा और ख़ाल की गहराई मौजूद है।

थाप की सहूलत के लिये मुश्किल लफ़्जों के माने र्वज कर दिये गये हैं।

इस किताब के बारे में आप अपनी राय हमें जरूर बताये ताकि अगली किताब तैयार करते वक्त उस से फायदा उठाया जा सके। فهرست

4	aue on	-1
A .	ب پروائ	-4
9	بے کاری	-14
14	ساری و نیا کے الک رنظی	-4
اس	مشق	-0
10	كبخش	-4
14	يه کينا تهوا	-6
14.	ہمارا وطن دِل سے بیارا وطن (نظم)	-^
IV	پؤوا	-9
Y	مشق.	-10
84	پتنگ	-11
ra ·	برسات دنظی	-11
44	ينب فسلطان	-114
19	كۆل	-11
PI	وهوبن	-10
PP	پیاری چرط یو (نظم)	-14
44	خوش حال كبان، تندر ست مز دؤر	-14
٣٤	تاج محل مهم	- 10

٨٠,	وهنگ (نظم)	-19						
p/1	مشق شق	- ř.						
42	ورخواست	-11						
NA	وهم بهار (نظم)	- 77						
M4	ميرانچين	-44						
۵.	کیا کیا جائے	- ۲8						
04	بائيسكل رنظم)	-10						
AA	خط	-44						
44	خط کے القاب و آواب	- 46						
40	دعوت نامه	-44						
44	كالجيك (نظم)	-19						
49	عقاب اور مكرسي	-r.						
منتخب اشعار								
44	ميترقق ميتر	اس						
44	مرزا استرالله فالب	-44						
40	نواب مرزا خال وآع	-60						
24	سيداكبرځين اكبراله آبا دى	-64						
44	شؤكت على خال قاتى بدليؤن	-40						
64	علی سکندر جگر مرّاد آبادی	-p=4						
٤9	رگھوپتی سہاے فرآق گورکھپؤری	-146						

लिखाई के बारे में

- १. एक ही हरफ़ को बारीक और मोटा लिखना एक तो कलम की बनावट और दूसरे कलम को चलाने पर निर्भर करता है। जब से फाउन्टेन पैन चले हैं, कलम को बनाने की बात ख़त्म हो गयी। लेकिन कलम को पकड़ने का ढंग अपने बस की बात है। हिन्दी में आप निब का रुख़ बायें से दायें करते हैं। उर्दू में दायें से बायें रिखिये। इस से अचरों की बनावट अपने आप ठीक होती जायेगी।
- २. रहनुमा के एक पृष्ठ में हम ने यह दिया है कि उर्दू यत्तर ऊपर से नीचे दायें से बायें यौर बायें से दायें किस तरह लिखे जाते हैं।
- ३. शब्दों के लिखने में इस बात पर ध्यान दीजिए कि एक दुफ़ा में हाथ हटाये बिना जितना आप लिख सकते हैं, लिखिए। निशानात बाद में लगाइये। उदाहरण के लिये (बसन्त) लिखना हो तो पहले जिल्ही लिखिए इस के बाद की बिन्दी, भात्रा, फिर की दो बिन्दियां लगाइये। कुछ और उदाहरणो पर गौर कीजिए:

शब्द इस क्रम से लिखिये

छटी बार	पाँचवी बार	चौथी बार	तीसरी बार	द्सरी बार	, पहली बार	उर्द् शब्द
	No.	No. No.	U	٠,-	~	سبزى
		تن	U	1.	1	برتن.
5	1	齿	لعا	5	لو	كوتحفارى
			0	کیا	U	كبياس
Mary .		The said	1	كبرط	اسر	كيرط
		4 4	U	کیو	لو	كيول
43			The state of	جگت	ملب	جگت
		كطل	bad	9	1	اوكملا
ا بگر	١	34,	20	b	6	جاددنكر
		11.7	4			

ایک تھا اندھا ایک تھا تگرا وہ دونوں کہیں جارہے تھے راستہ خراب تھا گنگرے نے کہا

"راسة خراب ہے"

اندے ہے کہا

۲- بے پرواتی

ایک تھا مالی ، ایک تھا کھار دونول دوست تھے۔ دونوں نے مل کر ایک اؤنٹ خرمدا اس برابک طرف سبزی لادی، دؤسری طرف برتن م سنری مالی کی تھی، برتن کھار کے دونوں اؤنٹ نے کر بازار گے باتوں میں ایسے گھے کر اؤٹٹ کا خیال مذربا ير ندو كمياكه اؤنث كيّا كرريا ب اؤنٹ نے اپنی گرون موڑ کر سبزی کھانا مشروع کی اور ذراسی دیریس سب صات کرگیا ایک طرف بوجھ نہ رہا تو دؤسری طرف کے برتن وحوام سے رکر پڑے اب تو مالی اور کھار ہوئے ا ليكن كربحى كيا سكتے تھے جو ہونا تھا سوہو پی

5162-r

اكبر بے كار بنیٹھا تھا ہم نے کہا "اكبرا اكبركبرا كنول تهيي منت بي اكبرك كهاد وارا سؤت ديتا نهيي، ش كيا منون ؟ ، کم سے کہا " دالا! دارا سؤت كيول بنيس دية ؟" دارات كما: ويهم رؤن وضَّتا بنيس مِن كيا كا تؤن ؟ ہم نے کہا:۔ "ديهم! ويهم! رؤني كيون بنين وصفة؟ ويم سے کہا:۔ رامؤ كياس اوْ في النيس، مين كيا وَصول با ہم نے کہا:-رائو! رامؤ! کیاس کوں نہیں اوسٹے ؟

رامؤ سے کہا:۔ سُوہن کیاس دیتا ہنیں، یْس کیا او مُنول ؟

ہم نے کہا:۔ "سوئن اسوئن اکپاس کبوں نہیں دیتے ؟ سوئن نے کہا:۔

"كونى كهدر بهنتا بنيس، ميث كياس بو كركيّا كروْن ؟" اب يه بات بهاري سمحه بيس آئى كرسب بے كار يوں بشطے بيش

آپ گھدر خریدتے ہیں۔ اکبر کیوا مبتا ہیں۔

واراً سؤت کا نتا منہیں۔

رامؤ کباس او ٔ ثنتا نہیں سوہن کیا س بوتا نہیں

سب بے کار بیٹھے ہیں۔

ہ۔ساری ونیاکے مالک

ساری ونیا کے مالک راجا اور برجا کے مالک انو کھے سب سے بزالے آنکھے اوجھل دِل کے اُجالے ناؤ جگت کی کھینے والے وُكھ بين سهارا دينے والے جوت ہے تیری جل اور تھل میں باس سنة تيري بيول اور يول مين ردِل یں ہے تیر بسیرا تؤیاس اور گر دؤرہے تیرا ے اکباوں کا رکھوالا تؤہ اندھیرے گھ کا اُجالا ہے آسول کی آس تؤ ہی ہے جا گئے سوتے باس تؤ ہی ہے

سوچ بیں دِل بہلانے والے
بیتا بیں یاد آنے والے
بیتا بین یاد آنے والے
بیتا بین کابان تیرے کھلائے
کھلتی بین کلبان تیرے کھلائے
تو ہی ڈبویے تو ہی ترایح
تو ہی بیرا بار لگائے
تو ہی بیرا بار لگائے

٥-مشوق

としてして

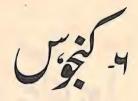
یہ حون کیسی لفظ کے پہتے ہیں یا آخر میں آئیں تواپ سے پہلے حرف کے بعد پنچے کھے جاتے ہیں جینے سے اوٹ سے سیاوٹ سے محل کمخاب مشریحان سیاوٹ سے حرفوں کو پڑھنے کی مشق اِس سبق میں کرائی گئی سے اِن کے لکھنے کی بھی مشق کیجے

راجا كابأتمي

لوگوں میں ہل چل کی گر راجا کا ہاتھی چھؤٹ گیا۔ مست ہوگیا ہے: چاروں طرف بچو ہڑ کا شور ہورہا ہے: بیٹے بڑے سب سہے ہؤئے بیش۔ لو اب وہ بیٹے بازار میں بیٹنے گیا۔ آج بسنت بیٹی کا میلہ بھی ہے ۔ سب لوگ عُمدہ کیڑے بیٹے بچر رہے بیش۔ لے لو بھگرڑ کی گئی۔ اسکول کے کچھ بتے کچھی، شمیم، انجم، بیش۔ لے لو بھگرڑ کی گئی۔ اسکول کے کچھ بتے کچھی، شمیم، انجم، بیش۔ لے کو بھگرڑ کی گئی۔ اسکول کے کچھ بتے کچھی، شمیم، انجم، بیش۔ لے کو بھگرڈ کی گوں نے انھیں اُٹھا کر ایک گھر کے اندر بہنچا دِیا۔
اس پرنیٹان میں ایک شخص سڑک کے کِنارے کُچھ ڈھونڈھ میا ایک شخص سڑک کے کِنارے کُچھ ڈھونڈھ میا ایک میا تھا ۔اس سے کِسی نے بوجھا کیا دیکھ دہتے ہو کہنے لگا ایک سٹریکان کا پاپنے بینے کا سِکہ گرگیا ہے وہ تو بھاگ گئے مجھے ،بل جائے گا۔ اس نے کہا:۔تم بڑے مؤرکھ معلوم ہوتے ہو۔ با نخ جائے اس نے کہا:۔تم بڑے مؤرکھ معلوم ہوتے ہو۔ با نخ پیشے کے لاچ میں ابنی جان گنواؤگے۔ وہ دکھیو بیچھے سے مست ہاتھی ارہا ہے۔ بھاگو اپنی جان بچاؤ اسے دیماگو اپنی جان بچاؤ اسے دیماگو اپنی جان بچاؤ اسے دیماگو اپنی جان بچاؤ کے۔ وہ ہاتھی کو گھیر لے گئے۔

مثق = باربار کونی کام کرنا ملازِم = نوکر

سب کی جان ہیں جان آئی۔



ایک آدمی بڑا کبؤس تھا۔ جب وہ مندر جاتا تو گھر کا دیا بھول گیا۔ رائے ویا بھول گیا۔ رائے میں آسے یاد آیا تو وہ واپس لوٹا اور لگا کواڑ کھاکھٹائے۔ میں آسے یاد آیا تو وہ واپس لوٹا اور لگا کواڑ کھاکھٹائے۔ بیوی نے بوچھا آپ اِتنی جلری کیوں لوٹ آئے۔ کیا

بوجا كرائے

كنوس نے كها "يوجاتو تنبي كى گوكا دِيا بجهانا بحول

كيا تها ـ يا د آبا لوث برا "

بیوی سے کہا و پا توش سے جمھادیا تھا۔ مگراب مجھے فکر ہے کہ واپس آنے میں آپ سے بےکار، می جوئتے گھس ڈلے۔

کبنوس سے کہا بھگوا ن شجھے ننگی کا بدلہ وے۔ تو جؤتوں
کی فکر نہ کر جوئتے تو میں ہاتھ میں اٹھاکر لایا ہوں۔ اب وہاں جاکر بہن لوں گا"

٤- پيرکنائهوا

ارے یہ کیا بڑا ؟ گھ سمھ بیل بنیں آتا کہاں تھا؟ اب کہاں بول؟

گھ سمجھ بیل نہیں آتا ۔ ابھی ابھی تو بیل اثبا جکوا ہمواتھا۔ اوھر سے بند کال کو کھری نے کھر کی نے دروازہ ۔ نے چلنا نہ بانا نہ اولنا نہ انسان بس ایک چو تئے تھی اُس سے کھٹ کھٹ کونا۔ مگر بھائی شنا کی سنا بیل بچو تئے تھی اُس سے کھٹ کھٹ کھٹ کرنا۔ مگر بھائی شن بھی کرتا بہی رہا ۔ گھٹ کھٹ کھٹ کھٹ دایکا ایک سنا اؤا کوالا بھٹا ہو۔ کواڑا دھڑم جینے ہو تو ہند ہیں بڑا بہار گرا ہو جینے توب کا گولا بھٹا ہو۔ بھائی تم ہنتے ہو تو ہند ہیں تو ائیبا بہی لگا اور دیجھ بھائی تم ہناں کھ کھٹ کو تا ہوں ہیں تو ائیبا ہی لگا اور دیجھ بھائی تو بیاں کھڑے ۔ وو ہنگو کھٹ کرتے رہو اور بیل کھٹ کرتے رہو تو گھر نہ کھٹ کھٹ کرتے رہو تو گھر نہ کھٹ کو بیل ہیں جاتا ہے۔

٨- ہماراوطن

یہ ہندوستاں ہے ہمارا وطن مجتت کی آنکھوں کا نارا وطن ہمارا وطن دِل سے پنیارا وطن وہ ہریائے کھیتوں کی تیاریاں وہ مجھل بھؤل پودے وہ پُھلواراں ہمارا وطن، ول سے بیارا وطن بوایس درخوں کا وہ جھومنا وہ بتوں کا پھولوں کا مُن جومنا ہمارا وطن ول سے پیارا وطن وہ ساون بیں کالی گھٹا کی بہار وہ برسات کی بلکی بلکی پھوار ہمارا وطن ول سے بیزارا وطن وه ماغول میں کوئل وه خنگل می موا وه گنگا کی لهری وه جمنا کا زور ہمارا وطن دِل سے پیارا وطن اسے تو ہے زندگی کی بہار مطن کی مُجّت ہو یا ماں کا یتار ہارا وطن ول سے بنارا وطن

(بنارت برج راتن چکست

٩- پؤورا

ایک دِن چِرایا نے پودے سے کہا آپ بیتی سناؤ

بودے نے بول کنا سروع کیا

ایک نتھا سا بیج زمین پرگرااؤر مِٹی نے اُسے اندر وہالیا۔ نھوڑے دِن تک مِٹی اور پانی کے زور سے وہ پھولٹا رہا۔ ایک دِن اس نے سر ہاہر زیکالا۔ لوگ کمنے گئے کِلا پھوٹا

بیم دھوب پان اور مٹی سے دِن پر دِن بڑھے لگا۔

بی بڑیا مُجھے دکھ رہی ہو وہ بی ہی ہوں، بی ہوں، بی ہی ہی تھا۔
بی بڑیا مبی کِلا تھا اور اب بی ہی ہی پاؤوا ہوں۔ بی جڑسے لے کر
اور تک کِتنا نازک ہُوں۔ اُنگی کے اِشارے بیں اُکھڑ مکتا ہوں
میری ہٹینیاں پتی بیل بین۔ وَرا سے بوجھ سے آؤسے جا بین
میری ہٹینیاں پتی بین بوجائے دو پھر دکھینا میری بڑیں دور
گی۔ لیکن مُجھے بڑا ہوجائے دو پھر دکھینا میری بڑیں دور
سید نین بیں پھیل جائیں گی۔ جڑا سے او پر تھوڑی دور
سیک تو بین ایک پتی جائیں گی۔ جڑا سے او پر تھوڑی دور
مولیا کیا ہوں
جائے گا۔ نمنی نمنی ٹھینیاں بڑے ہوگئ بین۔ یہ سیدھا چلا گیا ہوں
جائے گا۔ نمنی نمنی ٹھینیاں بڑے ہوگئ بین۔ یہ سیدھا جھے موٹا سا تنا ہو

گروں میں ڈالیں یا شافیں بھل آ میں گی۔ زم کونیلیں ہری ہری ہری بتیاں بن جامیں گی۔ میری چھا وں میں لوگ وھؤب سے بچا کریں گے۔ میری ڈالیوں پر متھاری جنیی چھوٹی جھوٹی ج

برگھا رُت میں اہلہا یا کروں گا۔ ہاتھی، گھوڑے ، گاے ، بھینس مجھ سے با ندھ جا میں گے۔ بران پتیاں بت جھڑ کے موسم میں گر جایا کریں گی اور میں نگا ہوجا یا کروں گا۔ بارش مجھ بیا جوڑا بہنائے گی۔ میں بھر ہرا بھرا نظر آوں گا مجھ میں بھول کھوں سے بھول کھیل گے۔ بھر مبری ٹہنیاں رنگ رنگ کے بھلوں سے بھول کھیل گی ۔ بھر مبری ٹہنیاں رنگ رنگ کے بھلوں سے لد جا میں گی ۔ لوگ توڑ توڑ کر کھا تیں گے۔ بی جوٹیا شھاری بھی وعوت ہو گئ

بس کہانی ختم ہوگئ۔ کہو کیسی مزیرار کہانی ہے؟ چڑیا بولی بہت اجھی! فرا وہ دِن جلری لائے میں شھاری ٹہنیوں پر بنیٹے کر بیٹھے بیٹے گیت تُنھیں مُناؤں گی "

١٠ مشق

<u> ز ز ز ن ق</u>

یہ حرف دیکھے میں ایک جینی شکل کے بیش لئیکن نُقطوں کے فرق سے اِن کی آواز بدل جاتی ہے اس سبق میں ایسے لفظ لائے گئے ہیں۔ جِن سے اِن حرفوں کی مشق ہوجائے

پارس

منہؤر ہے کہ اگر پارس لو ہے کو چھؤجائے تو لوہا سونا بن جاتا ہے کو کی گھڑ ہوتی ہوتی ہے ۔ جاتا ہے کو کی گھڑ ہوتی ہے ۔ کوئی کہتا ہے پہر ہوتا ہے کسی سے بھی پارس وکھا بہیں مگر اِس کے تقفے بہت منہؤر بین ایک قصر یہ ہے ۔

قدیم زمانے میں زبلا ندی کے کِنارے کِنارے ایک بادشاہ کے ہاتھی چلے جارہے تھے۔ سب سے بڑی ذات کے ہاتھی اور نظاہ کے ہاتھی ہوئے باور کی جارہ اور نظار باری ہوئے لئے باور کی جارہ کی

کمیں بہت نہ چلا۔ بادشاہ کو اِطلاع ہؤئی تو وہ بھی فکر مند ہو گیا کیوں کہ یہ اُس کا چہتیا ہاتھی تھا۔ سب نناہی ملازین کا کھانا۔ يينا حرام بوگيا - بون تون رات گزرى - صبح بيم تلاش شرفع ، بوئ اس باللی کا جاوت باگلوں کی طرح جاروں طرف روتا وحوتا ہاتھی کا نام لے لے کر پکارنا پھر رہا تھا۔ لتے بیں اس یے نزدیک کے ایک کھڑے ہاتھی کی چِنگھاڑ سنی لیک کر وہاں پہنچا ولکھا تو وہی ہاتھی تھا۔ دؤسرے ہاتھوں کی مدوسے آسے نکالا لیا تو لوگوں نے تعجیب سے دیکھا کہ ہاتھی کی زنجیر ہو لوہے کی تھی سونے کی ہوگتی ہے۔ اب تو سب کے پڑمردہ دِل باغ باغ ہو گئے۔ مخبروں نے باوشاہ کو ہاتھی ملنے کی خر شائی اور ساتھ ہی یہ مُزوہ بھی شایا کہ ہاتھی کی پوری زنجم سویے کی ہوگئی ہے۔ بارشاہ اور درباری فوراً سبھے گئے کہ ہاتھی کی زیجے کمیں یارس سے چھو گئ ہے۔ اب تو بڑے تثوق و ذوق کے ساتھ ہائیموں کو زنجیریں لگا لگا کر اِس جگل میں سے قطار در قطار گزارا گیا - خود پیارے لوسے کی شام ٹیکتے ہؤئے جًد جًد سے گزرے۔ مذکوئ لوہا سونا ہُوا اور مذکوئ پارس دِکھائ دِیا۔ یہ رو چار روز کی مخت بس اکارت گئ۔ اِس سلط میں ایک تطبع بھی شن کو۔ اکبر بادشاہ كا وزير عبدالرجم خان خانال برا قابل اور بهت سخى آدمى تفا

ہندی کا وہ مانا ہوا کوی ہے ، فاری تو اُس کی مادری زبان تھی ہی۔ عربی اور سنگرت کا بھی وہ بڑا و دوان تھا۔ اس کی سخاوت کا یہ عالم نھا کہ لوگ اٹسے پارس سمھنے لگے تھے۔ اس ك مُتعلّق قِسم كے قطے مشہور ہوگئے ستھے۔ اس زمانہ مِن قَفِي مِن ایک غربیب بُرْهیا رہتی تھی۔ بہت نیک اور ساره دِل تھی وہ سمجھتی تھی کہ فاں فاناں سے تیج بارس ہے. جی میں گئی کھی کہ خلا کرے کبھی اس کا گزر اس طرف سے ہوجائے تو اس کا سب ولڈر دؤر ہوجائے۔ فدا کا کرنا ایک روز اسے خررملی کہ خان خاناں اس کے نصبے میں وورے پر آنے والا بع - اندها كيا جام دو آنكيس - برُعيبا بهت خوش بوني - اور بے چینی سے راہ تکنے لگی ۔ فان فاناں آئے تو سب کی آٹھے بیا كرايك لوہے كا توا كے كر دؤڑى كم إن كے جم سے ركھنے سب بابن ہائیں کرتے رہ گئے۔ وہ نے رکی ۔ فان فاناں فوراً تاڑکے کہ بات کیا ہے۔ اپنے آدمیوں سے کہا کہ اس سے توا ے لو اور ایبا ،ی توا اس سونے کا بنواکر دے دو۔ برطبا کے گھر سونے کا توا بہنج گیا وہ نہال ہوگئی. عبدالرجم فان فاناں کو سے یع بارس سمھتی رہی

ا و ربھی بہت سے نقطے اور کیلینے پارس کے منہؤر بین ۔ مگر آج کک کِسی سے بارس دیکھا نہیں



مِیاں رشید نے ایک دن بہنگ اُڑائ ۔ پہنگ کھ اونجی ہو گئی ہو گئی تو ہوا اولی:۔

" آوَ میرے ساتھ آوَ بَن تھیں دنیا کی سیر کراوں ۔ تینگ بولی بڑی تو میرا بھی چاہتا ہے، مگراس ڈورنے

يو عكود ركها في ي

ہُوا اولی:- یہ کتنی بڑی بات ہے - بین تھاری مدد

كرۇل گى "

وہ بہت تبزی سے چلنے گلی، ڈور ٹوئٹ گئی ہوا نے کہا: ً لواب ہم نُم دُنیا کی سیر کو جاتے بین '' وہ خوب تیزی سے چلنے گلی پتنگ کو بھی اُڑائے

بیئے چلی جارہی تھی تپنگ گھراگتی بیلا کر کہنے لگی:-

"اے بنے اتنی تیز تو مت چلو میرا تو سائس بھولا جارہا

شمثر"

ہوا نے ایک ندور کا قبقہ لگایااور اپنی چال اور بھی تیز

دو نوں بس اُڑے چلے جا رہے تھے۔ درخوں پر سے بہاڑوں پر سے بہت نیزی سے گزر رہے تھے۔ اِت میں سُوری کے سامن بڑا سا بادل کا گلڑا اگیا۔ اور مینہ کی مونی مونی بؤندیں بینگ پر گرنے گییں۔

نینگ چِلائی ''اے بی ہوا، اے بی ہوا، فدا کے لیئے مدد کرو۔ بین بھیگ دہی ہؤں ، بین کینے اُڑ پاؤں گی '' مید کرو۔ بین بھیگ دہی ہؤں ، بین کینے اُڑ پاؤں گی '' بیوااس کے جواب بی دانت لکال کر ہنس پڑی اوربس بواس کے جواب بی دانت لکال کر ہنس پڑی اوربس آگر گری۔ بات اور کیچڑ بیں لت بہت اب تو نینگ بہت آئر گری۔ بات اور کیچڑ بیں لت بہت اب تو نینگ بہت میں خور سے بندی دئی دئی اور کی اور کی گئی '' بین ڈور سے بندی دئی دئی تو کیوں ہیں میں بھنستی ''

۱۲- برسات

برکھا آئی بادل آئے اوڑھے کالے کبل آئے مخندی شندی آین بوابن كالى كالى جھاييں گھاييں گری نے ڈیرہ اُمھوایا دھؤپ بہ سایا غالب آیا پھیلا ون کے ساتھ دھنرلکا بعؤرا بعؤراء بلكا بلكا برلی آئی سشور میاتی بھیے بھیے نغے گاتی باول سے امرت جل برسا امِرت جل کیا کومل برسا ہوگتی زِنرہ مُردہ کھینی وُهل گئ ذرّے چکی رہی دربا اور سسمندر أبحرك تازہ مؤمیں نے کر اُتھرے

باغول مِن سبزه لهرانيا بھۇلول ، كليول بىس رس أيا بھر شاخوں نے فِلعت پہنے پھریائے ہریائے گہے! بيول كھلے كلياں لہرائي كونييس بهر شاخون من آيش موتی باول نے رکائے یتوں نے دامن بھیلائے تالابول میں مبینٹرک بولے يبيول نے مُنّا اپنے کھولے بادل گرجا ، بسجلی چمکی آئ صدا رم جھم رم جھم کی به مهندا برسات کا عالم يه بيارا برسات كا عالم گرمی کی فریاد نہیں ہے گرمی کب تھی باد ہیں ہے

بيمات أكر آبادي

١١- لييؤسلطان

شرِّنگا یٹم نینور کے قریب کا دیری دریا کے ایک جزیرے پر واقع ہے۔ یہاں بڑانے زمانے میں بہت سی خوب صؤرت عارتين تفيس عده عده باغ تقے ووسو برس بہلے بہاں میسور کی راج دھانی تھی۔ اس میں ایک بہت بڑا فیلعہ

أس وقت ليبيئ سُلطان ميسور كا بادشاه شما - وه سُرُكًا يتم کے قلع بیں رہتا تھا۔ اِس قلعہ بر آنگر بزوں نے کئ بار حملہ كيا - وه بيور بر قبصه كرنا جائة نظي عظر بيني سُلطان برمزنم بہاوری سے لڑا۔ اُس نے انگریزوں کو قلع کے اندر نہ گھنے ویا - اِس کی بہا دری و کھے کر انگریز گھرا گئے ۔ آخری مرتب اُنھوں نے بہت بڑی فوج بلائ اور فیٹرنگا پٹم پر چڑھائ کردی لین سلطان اپنی فوج نے کر مقابع پر آیا۔ بہت زور کی الال بولی اس وقت وه گھوڑے پر سوار تھا۔ ہاتھ میں تلوار تھی۔ وہ شیر کی طرح وشمن پر جھیٹا۔ لڑتے لڑتے اس کے ایک گولی آکر ملی اور وہ گھوڑے سے گر پڑا اور شہبر ہوگیا۔اُس سے دیس کی فاطر جان وے دی مگر بار نہ مانی

یٹیؤ شلطان نے لیے زمانے میں بیٹورکو خوب نزتی دی۔ اچھے اچھے باغ گولئے، مسجدیں بنوایش، مندر بنوائے بڑی بڑی بڑی عاربیں نیار کرایئ ، لوگوں کو نے کئے کام بیکھانے کا انتظام کیا۔ اُسی وقت سے نیسور کے کیٹرے مشہور بڑوئے۔

یبیو سُلطان نے اوَر بھی بھلائی کے بہت سے کام کے اُس کو لین وطن سے بیتی مُعَبّت تھی ۔ وہ ایک بہاررُر سیابی تھا

اِنھیں باتوں کی وجہ سے پیپو سلطان کا نام آج بھی عربت سے بیا جاتا ہے۔

سُلطان= بادشاه ایک جزیرے بر واقع ہے = ایک جزیرے پر بسًا ہوائے:

۱۲- کنول

پھول تو سب، می اچھے گئے ہیں۔ لیکن کوّل کا پھول پانی کا راجا ہے - اِس کا بودا جھیلوں اور تالابوں میں ہوتا ع - چوڑے بوڑے بے ، لال لال ، سفید سفید اور گلابی كُلُوبِي بِيول كِنْ كِعل لِكَة بِن - كُنُول كا بِيول زر دبعي بوتا ہے۔ مگر شرخ اور زرو بجؤل ولے پاؤرے ہمارے مک یں کم ہوتے بین - اِس پاؤ دے کی جو پان یس ہوت ع - بعة پان پر تيرت رسة بين - جب بارش ، وق ب اور قطرے یان پر رہ جاتے بیش تو اثبا معلوم ہوتا ہے بینے مولی و طلک رہے ہیں ۔ پووے کے سے یمل پھول تو گتا ہی ہے عگر ایک پتیز اور بھی گتی ہے۔ جنبے چھوٹے چھوٹے بتانے۔ یہ کنول گنا کہلاتا ہے۔ کنول گنا اصل میں اِس پیر کا پیل ہے۔ اس میں بیج ہوتے بیش كُنُول كُمِّةً كو سُكُها كر بِهَارٌ مِن كَفِيلِين بَهِي بِنَانِ يَبْنَ- إِن کھیلوں کو لوگ کھی میں تل کر شکر ولا کر کھاتے بین - طوول یں ڈالتے بین اور دواؤں کے کام میں لاتے بین- الل كر كھاؤ تو بہت مزے دار معلوم ہوتا ہے

۵۱- وصوبات

اے لو دھوبن آئی ، گھر پیس گھٹی تنی کہ شاہد کی ماں نے کہا: " واہ بی دھوبن! اب کے تو تم نے بہت دیر الگادی۔ اِتوار اِتوار آٹھ بیر نؤ، منگل دس، آج بُرھ گیارھواں ون ہے۔ گھر بیس کیڑوں کی لادی پڑی ہے بیچ سب بیلے ون ہے۔ گھر بیس کیڑوں کی لادی پڑی ہے بیچ سب بیلے پھر رہے بیش ﷺ

دهوبن "بيوى كيا كرون ، نتهارا وهوبى بيمار پراگيا كئ وِن خوْب بنجار آيا - اب ذرا الجِها بنوا تو بهتی چڑهائی اکيل كام كرمنے والى ميرا ديور نه بوتا تو اب بھى كيڑے نه

وُهل ياتے

شاہد کی ماں سلیمن زرا گھری اُنزوالو۔ یہاں میرے پاس رکھو۔ زرا کابی اُٹھالو۔ کیٹرے طلائ ۔ بی وھوبن اب کی تُم نے کیٹرے کیٹرے اُٹھالو۔ کیٹرے اُٹھی اب کی تُم نے کیٹرے کیٹے دھوئے پیش ۔ اے ہے! یہ رشیمی کرتے کا تو ٹئم نے کیا حال کیا ہے ؟ اور یہ شاہد کے آبا کے کرتے بی رٹیک کیے لگ گیا ؟

وحوبن : " ہاں بیوی اس و فعہ گرد بر میں یہ سب پھے

ننابد کی مال بڑاب کے کئی کپڑے کم بھی تو بیش۔ ایک مروانہ پاجامہ نہیں ہے۔ شاہر کا کُرْنا کہنیں آیا ہے۔ میرا دو بیٹر غائب سے یہ

دھوبن یہ سب کبڑے گھر یس بے وُسط پراے يَّنْ - بَعْنَى جِرط ما ني بهؤل كئي - دو نين دِن مين وُهل جا بين گي من استری کرے تیار رکھوں گی۔ سفتے کوسلیمن کے ہاتھ منگوالینا ابھا بیوی جاب کر دیکے . مجھے آج بڑی ضرورت ہے " شاہر کی ماں۔ ہاں ہاں، بیش نے جاب کرایا ہے۔ دو رؤید دس آنے ، وے ۔ یہ لو تین رؤید باق وام اگل وُھلائی میں کٹ جابین کے سلیمن عنل خانے سے بنا کیوے أتلها لاؤ. رشيره ، شاہر ، احن ، محن ، چلو جلدي سے كيڑے أمار والود رستيره بين ، زرايه كيرب كس ين ركه دو اور سط كبرے كابى ميں كھ لو- مجھے جلرى سے بتاريا چرمان ہے _ تنابد کے آبا نو بح وفر جلے جایش گے۔ بی وھوبن ویکھنا اب کے دیر مت لگانا

١١- ياري چرطايو

جہکے ہوئے پھؤل کے پاس اور لیکتی ہونی نناخ پر بنیٹھ جاؤ ہوا بس کبھی اُڑے بازؤ بلاؤ کبھی صاف چٹے میں غوطہ لگاؤ بُول بسی بنیاری چڑایو ابھی اور گاؤ بُول بسی بنیاری چڑایو ابھی اور گاؤ

پُھُرک کر اِدھر سے اُدھر دؤڑ جاؤ پہک کر اِدھرسے اُدھر پر ہلاؤ چک کر کبھی نناخ بر چہہاؤ اُپھل کر کبھی نہر پر گُنگناؤ

ئير الله بنياري چرايو الجي اور كاو

کھی برگ تازہ کو مُنّہ بیں دباؤ کھی گُنّے میں بنٹھ کر کھی طری طاق کے کھی گھاس پر لوٹ کر دِل ابھاؤ کھی واکے بیاوں کو جھؤلا جھلاؤ

ایوں ہی بناری چرایہ اہمی اور گاؤ

مولوي مخذ المعيل ميرشي

برگ نازه = ازه پخ گنج یه جُھنڈ

ا خوش حال کسان تن رست مردور

گاندهی جی کا خیال تفاکه اگر ہم شراب نہ یعیں تو ہماری مالی حالت ورست ہو سکتی ہے۔ اِس لیے وہ شراب کو بهن بُرَا سمِحة تح يكن زرايه تو بتائية مالى حالت ورُست ہونے کا مطلب آپ کیا سمجھے بین ۔ بات یہ ہے کہ ہرآدی کو زنرہ رہے کے لیے کھ چیزوں کی حزورت ہوتی ہے اور وہ ان ضرفرتوں کو بورا کرنے کے لیے رتجارت یا محنت مزدؤری کے ذریعے رؤیبے کاتا ہے ۔ ہم میں سے اکثر آوی غریب بین نینی وہ جتنا رؤیہ کاتے بین-اِن کا خرج اس سے زیاوہ ع - اب اگر وه اس رؤیے کا زباوه حِصّر نظراب پاکسی وؤسری چیزیں خرج کردیں تو اِس کا مطلب یہ ہوگا کہ وہ اپنا سی نہیں اپنے بیوی بیوں کا پہیٹ کاٹ رہے بیں جس سے سے ایک وقت کی رونی چل سکتی ہے ۔ اُس پیٹے کو اِس طرح بے کار اُٹا دینا کہاں تک ٹیک ہے، جو لوگ اینا پیمر بے کار خرج گرتے بین آن کی مالی حالت کھی مھیک بنیں ہونی کمانوں اور مزدوروں کو فاص طورے اس مون سے وؤر رہنا چاہیئے۔ منا سے جو آدی لگا تار چالیس ون نشہ کرے وہ پھر اُسے مشکل ہی سے چھوڑ سکتا ہے · پھر وہ چوری کرنے یا فرض اُدھارنے نننے کے لیئے پیشہ صر<mark>ور نِکالے گا۔</mark>

آپ جانے بین کسان ہم سب لوگوں کے لیے اناج اگاتے بین اور مز دؤر ہمارے لیے بل چلاتے بین ، شکر بنائے بین ، کارخانوں میں کام کرتے بین ۔ اِن کی تنخواہیں تخوری اور کئنے بڑے ہوتے بین ۔ اگر وہ اپنا پیشہ ہے کار اڑائی تو اِن کے گروں کا گزارہ مُشکل ہوجائے ۔ اچھے کِسان مزدؤر اثبا بہیں کرتے ایسان مزدؤر اثبا بہیں کرتے

گاندھی جی چاہے تھے کہ ہندؤستان کا ہر آدی خوش عال تندرُست اور مال دار بے اور اپنے کام میں جی لگائے کا ندھی جی ہے اور اپنے کام میں جی لگائے کا ندھی جی نے اس میے نئے کی روک تھام پر اتنا زور دِیا نظا۔ گانگریس نے جب محکومت کی ہاگ ڈور منبھالی تو مہاتماجی کی باتوں پر خاص طور پر زور دیا۔

بھاری محکومت نے اِس کے لیے وو ترکیبی بکالی بیث ایک تو ننے کی چیزوں کو باہر سے نگوانا بند کردیا ہے اور دلیسی نثراب پر بھی پابندی لگادی ہے ووسرے شرابیوں کو شدھارنے کی کومشش کی جاتی ہے ورن سجھانے بنجھانے شدھارنے کی کومشش کی جاتی ہے ورن سجھانے بنجھانے سے بنیں بلکہ ان کے لیے تفریح کا نے بجانے اور کھیل کورکا اِنتظام بھی کیا جاتا ہے واس کے علاوہ اِن کی کورکا اِنتظام بھی کیا جاتا ہے واس کے علاوہ اِن کی

عا دتوں کو رفتہ رفتہ چھڑانے کے لیے ایشی چیزوں کی دوکائیں بھی
کھلوائیں بین جو پینے میں مزیدار بین اور نشہ نہیں لاتیں۔ یہی
وجہ ہے کہ ہمارے کیان اب پہلے سے زیادہ خوش عال بیش۔
اور مزدوروں کی تنرری روز بروز بہتر ہورہی ہے۔ ایک دِن
یہی کیان اور مزدور دیں کو جنّت کا منونہ بنا دیں گے۔

وُرُسِتْ = شھیک اِس کے علاوہ = اس کے سوا روز بروز = دن برن - رفتہ رفتہ - لگا تار یتجارت = بیو پار

١٠- ماج محل

تا ج محل و نیا بھر کی اہمی سے اہمی عارتوں کا سراج ہے۔ اس کے دکھنے سے دِل پر خاص اثر ہوتا ہے۔ ہمارے دیس کی بیوں کے لیے تاج وہ چیز ہے کہ اس کے ہوتے ساری و نیا کی عور توں میں اِن کا سر اوُنچا رہے گا سے گا سر اوُنچا رہے گا ہمارے دیس کے بہت مشہور با دشاہ شاہ جہاں نے بہت مشہور با دشاہ شاہ جہاں کے بہت مشہور با دشاہ جہاں کے بہت مشہور با دشاہ جہاں کے بہت مشہور با دشاہ شاہ جہاں کے بہت مشہور با دشاہ دارج نے باتو یا شاہ درج نے باتو یا میں درج نے باتو یا شاہ باتو یا شاہ باتو یا شاہ باتو یا شاہ درج نے باتو یا شاہ باتو یا درج نے باتو یا درج نے باتو یا شاہ با

اپنی چہیق ملکہ ارجمند بانو یا تتناز محل کی یاد کار میں سے عمیر کرایا یہ اگرہ چھاؤنی سے اُرِّ کی جانب کوئی ایک میل کے فاصلے

پر جنا کے کنارے پر ہے

تاج محل ہے پوری سنگ مرم کے ایک اؤ نیج سے مان ستھرے چہونڑے پر بیچوں جی کھوا ہے ۔ چہوئڑے کے چاروں کون پر بڑے ہی سڑول اور نفیس و نازک مینار بیش گنبد سلے کون پر بڑے ہی سڑول اور نفیس و نازک مینار بیش گنبد سلے ہے حد خوب صورت اور خوش نما جالی دار مرمری بیتھر کے اندر نناہ جال اور ممتاز محل کی قبریں بنی بیش

تاج محل کی تغییر کے لیے بمندؤشان ہی میں مہیں بلکہ تام ایشا سے معار سنگ تراش وغیرہ بڑے بڑے کاری گر ایکے کے کے کے کام کا کھٹے کے گئے ۔ اِس کا نقشہ اُستار عیسیٰ نامی نے بنایا تھا - جو

کوئی مُرک یا شیرازی تھا۔ رس برس کی لگاتار اور زبردست محنت سے شکالیہ بیں کام ختم ہنوا اور ایک کروڑ بیچاس لاکھ رؤبیہ خرج آیا۔ دیس سے قیمتی بیٹھر اور مسالے ایکھٹا کے گئے ۔ اس طرح سے دور دور سے قیمتی جواجرات لا لاکر بڑے خوب صورت اور مؤدوں طریقے سے جڑھے گئے اور سولے بائدی کے دروازے لگائے گئے۔

اندرؤن حضے میں وہ بیل ہوئے اور پھول پتیاں بن بین کہ وُنیا کے پروے پر یہ منوے کہیں اور بہیں سطے یہ سب کام پیمی پتھروں اور جواہرات اور سیب وغیرہ سے کہا گیا ہے۔ باہرسے اِس کی خوبھورتی اور دِل کشی ایشی ہے کہ دیکھنے والے کے دِل پرنقش جم کر رہ جاتا ہے۔ جن کہ دیکھنے والے کے دِل پرنقش جم کر رہ جاتا ہے۔ منا پارسے تان کو دیکھو تو کچھ اور ای نطف ہوں ہی کھونے ویا ہی موہ دیتی ہے۔ خومًا چا ندنی دات میں اس کی سیر بڑا ہی موہ دیتی ہے۔ خومًا چا ندنی دات میں ایک سیر بڑا ہی موہ اور اِس سلے میں دہاں میلا سالگ جاتا ہے۔ باہر کے اور اِس سلے میں دہاں میلا سالگ جاتا ہے۔ باہر کے اور اِس سلے میں دہاں میلا سالگ جاتا ہے۔ باہر کے دوگوں کے لیے مارچ یا اکتو ہر کا جہنے تان کی سیر کے لیے

ثنا سب الوانا بين

سرناج = ناج سر- آقا

یا د گار نام نام بین یاد رہے والی چیز

تغییر کرانا = بنوانا جانب = سمن - اور متمار = رعارت بنانے والا - راج شک نزاش : پفتر کا شے والا - بقیر کا کام بنا نے والا -مؤزوں = مناسب - طبیک

19- دهی

آج بادل خوئب برسا اور برس کر کھل گیا گلتاں کی ڈالی ڈالی بیت بیت وسل گیا

ہٹ گیا یا ول کا پروہ مل گئ کرنوں کو راہ

اللفنت پراپنی بھر خورشید نے ڈالی رنگاہ

وے رہی ہے گطف کیا سرسبز پیڑوں کی نظار اور ہری شاخوں یہ ہے رنگین پیؤلوں کی بہار

ونكيفنا وه كبا ابينبها سي ارك وه وكمينا

اسمال بران ورخوں سے برے وہ دمجھنا

ہے یہ قدرت کا نظارہ اور کیا ہے اسے بس یہی جی جا ہتا ہے دیکھے رہے اسے

و کیو دکیو اب می جان ہے یہ بنایی دھنک

د کینے ہی د کینے گم ہوگئ ساری دھنک

پهر ، اوا بيس بل گئ ده سب کي سب کي کي پين

أنكيش لل الكرية ومكيمو أو اب يجه بهي بنيس

حفيظ جالندهري

٠٠٠-٢٠

س ث ص ض ه ح خ ق ط ظ - ا ع غ

" تہنا بِندی کے ذریعے اُردؤ میں ہم نے یہ بات بتادی ہے کہ اُردؤ میں ہم نے یہ بات بتادی ہے کہ اُردؤ میں چند حرف ایسے بیش جِن کی آ واز ایک ہے مگر شکلیں الگ الگ بیش واللہ اللہ بیش واللہ بیٹ کے کون سا حرف کھیں واس کا علاج تو کھنے پڑھنے کی مشق ہے بہم بھی اِن حرفوں کی مشق کے لیے ایک خاص سبق یہاں دیا گیا ہے ہے۔

سركشي

ایک روز بدن کے تمام اعفاء مُتَفِق ہوکر مِعدے کا گِل کرنے

گے کہ ہم کماتے کماتے نفک جاتے بین اور یہ بِکھٹؤ مِعدہ نفت ہی

ہماری کمائ ہضم کرجاتا ہے۔ آ بخرسب نے اس کی اِطاعت سے کرشی

گی، یا تو نے رفتار ہا تھوں نے کا روبار ترک کیا۔ آنکھوں نے بھارت

سے آنکھ بچُرائ ، کان سماعت سے بے بہرہ ، و گے مورائ کیا کھفا بچھوٹ دیا

دبان نے جکھنا بچھوٹ دیا

جب اعضاء کی نا فرمانی اِس صد کو پُنٹی کہ ہر ایک نے اپنا اپنا کام بند کردبا تو غربیب مِعرے کو غذا کہاں سے ٹیسر ہوتی۔ رکھ عصے تک بے آب و دانہ صبر کیے پڑا رہا۔ آ بڑکار ہر ایک عنو کو ایزا پہنچی اور آن کی طاقت زائل ہونے گئی۔ ہاتھ کف افسوس ملنے اور پائو ایڑیاں رگڑنے گئے۔ آئکھوں نے روناجھیئیکنا ترفع کرنےا۔ کان بھی مارے تنعف کے شن ہو گئے۔ ناک کا بھی ناک میں دم آگیا زبان کا بولنا بند ہوگیا۔

مِعدے نے کہا او میرے مددگارو اب تم کو معلوم ہوا کہ جو گھر نتھاری مخنت ومشقت کی برولت تجھ کو پہنچا تھا وہ رائیگاں نہیں جاتا تھا بلکہ خود تھارے ہی صرف بیں آتا تھا جو غذا تم مجھ کو تولے کرتے تھے بیں اِس کو ہفتم کرتا اور جو خون اُس سے بیل ہوتا وہ رگوں کے وسیلے سے گل اعضاء بیں حصہ رسد تقییم ہوجاتا تھا۔ اِسی سے متماری سب کی پروزش ہوتی تھی

١٤-ورقواست

(1)

بخدمت جناب پرنپل صاحب

اکتا دول کا مدرسہ

جامع يتير إسلاب

مُحرّم - تسليم

عرض ہے کہ ایک ضروری کام کی وج سے بیش کل

ار ابریل سائن کو مدرسے حاضر نه ہو سکوں گا

آپ سے درخواست بے کر ایک دِن کی اِتفاقیہ

وخصت منظؤر فرمايش

عِنابت كا " شكريه

نیازمنر بخش فادری عبدالله ولی بخش فادری کپرر و ایریل لکنهٔ بخدمت جناب کمشنر صاحب محکم تشخیص و وصول ولی میونیل کار پوریش دالی

مكرمى ونسليم

آپ کا نوٹش نمبر کے ۲۰۷ مورخ ھر اپریل ۱۷ بابت شیکس مکان وصول بُوا

اِس سلط میں عرض ہے کہ میں لئے مکان میں کوئی کرہ بہیں بڑھایا جیسا کہ نونش میں کہا گیا ہے۔ اس لیے اس کائیک شرطایا جائے۔ اُمیدہے کہ درخواست فیول فرمانی جائے گی۔ مشکریہ

خادِم برام سسرن الک مکان منتب بر و او کھلا بنی وہلی ع<u>دم می</u>

١١ ايريل كن

خادِم = خدمت گار - نوکر تشخیص = جانچ - مُقْرر کرنا محکمه = فریبار شن - کِهری محکمه عبر میراد بر کرم کرنے والے م میرے مہر بان در خواست: عرضی بخدمت: خدمت میں مُحترم: عِزت والا بُزرگ شیم : بندگ - آطب رُخصت: جَیمیؓ

فِنا بت و بربان

۲۲-مؤسم بهار

وہ کھل کھل کے کلیاں چکے لگیں درخوں کی صورت برلنے لگی وہ پھوئے ہزاروں طرح کے گلاب كِعلى جائدتي باغ مين جابجا وه لاله کیلا وه کھلی کامنی كھلے بُھول لاكھوں طرح كے تمام وِ کھانی ہیں تُدرت کی صناعِباں وہ جِتَوں سے جھکنے لگی ٹہنیاں اناراینا جوبن دِکھائے گے لئلتی بین آموں بیں وہ کیڑیاں آمنگوں یہ سے جوش رنگے بہار

ئ بتيال وه چك لكير وه شاخول میں کفّل نکلنے لگی کھلے بھول سلے کے وہ لاجواب وه پیول چنیلی ، رکھلا مو گر ا وه بکولی نواری ، کھی کا نی يه فطرت كاسبة فروق إنتظام وه بھولوں بہ اُڑتی ہوئی تتاباں كرين يُحولون براشهركي محصان وہ گدرائے بھل رنگ لانے لگے وه انگور وه رس تجری لیجیال وِکھاتا ہے پھولوں کا جوہن بہار

مین اِس شارخ تدرین به هردم نیار وکھائی ہمیں جس نے کیا کیا بہار

صنّاعی: کارنگری نیخهاور

فِطرت قُدرت

۲۲-میرانیون

میرے ول میں والید کی بے صر عظمت تھی میں انھیں قُوت ، بِمَن اوْرعقل كا يُبتلا جانتا نفاء اوْر حِقْن آدمي بين ين ویکھے تھے سب سے برتر سمجھا تھا۔ مجھے آرزو تھی کہ بیش برطا ہوکران جیسا بن جاؤں ۔ مگر عظمت اور مُحبّت کے ساتھ ساتھ سے دِل میں اِن کا در بھی بنیھا ہُوا تھا۔ میں نے اِنھیں نوکروں وغیرہ برخفا بوت وكيها نها. إس وفت وه مُجْ بهت دراؤك معاؤم ہوتے تھے ۔ اور بین خوف سے اور کبھی کبھی طیش سے کا نمیے لگتا تھا کہ نوکروں کے ماتھ ایشا برتاؤ کیا جاتا ہے۔ اِن کا غُفتہ واقعی بہت بڑا تھا۔ اور بین نے اس وقت کیا اس کے بعر بھی اِس مُكّر كا غُمّة بنين ديكها - مكر به ايتها تها كر ان بين ظافت كا مادّہ تھا اور اِراوے کے مفیوط تھے۔ اس کیے عام طور پر ضبط سے کام لیتے تھے۔ عُرے ساتھ ساتھ یہ ضبط کی قُوّت بڑ صتی گئی اور آخر عربی شایر سی انیش بہلا ساعقہ آیا ہو مجھے پیکین کی جو سب سے پہلی بائیں یاد بین اِن بیں والبركا عُقة بمي ہے. اس ليے كريہ بھر بري نازِل بنوا تھا۔ ين إن دِنوں كونى پائخ چھ سال كا تھا۔ والد كى ميز پر دو قلم (فاونٹین پن) رکھے ہوئے دہکھ کر میرا دِل للجا گیا۔ بین سے کہا اِنھیں ایک ساتھ دو فلموں کی حزورت ہوتے سے دی اس لیے ایک بین سے دی اس فلم کی ایک بین سے دی اس فلم کی دور شور سے تلاش ہورہی ہے تو بین بہت ڈرا مگرین نے اِقرار ہنیں کیا ۔ آخر بیت بیل گیا آور میرے بُرم کا ڈھنڈورا پیٹ گیا۔ والد بے عد نھا ہؤئے آور میری نؤب مرمّت کی ۔ بین دردکی گیا۔ والد بے عد نھا ہؤئے آور میری نؤب مرمّت کی ۔ بین دردکی تکلیف اور ذِلّت کے رخ سے بے تاب سیرھا ماں کے پاس پہنچا۔ اور کئ روز تک میرے بچھوٹے سے وکھتے ہوئے جم پر طرح طرح کے دونوں کی مائش ہون دی

بُعِيدا ہُو ئی ہو۔ غالبًا میرا یہی خِیال مقاکر سزاتھی تو بالکل بجامگر پنیدا ہو ئی ہو۔ غالبًا میرا یہی خِیال مقاکر سزاتھی تو بالکل بجامگر صد سے بڑھ گئ تھی۔ لیکن باوجو د اس کے میرے دِل میں ان کی عظمت اُور مُجّبت اس طرح قائم رہی۔ اب میں اِن سے ڈرنے بھی لگا۔ البتہ والدہ سے بالکل نہیں ڈرتا تھا۔ کیونکہ یہ معاؤم تھا کہا ہیں مین کچھ بھی کرؤں وہ در گزر سے کام لیں گی۔ اِن کی بے اندازہ مُجّبت کی وج سے بین اِن کے ساتھ کسی قدر تحکم کا برتاؤ کرنے لگا متھا۔ والید سے تو کبھی کھی مِلنا ہوتا تھا اور اِن کا ہر وقت کا ساتھ تھا۔ والید سے تو کبھی کمی مِلنا ہوتا تھا اور اِن کا ہر وقت کا ساتھ تھا۔ اس بِلے اِن سے مین زیادہ مانوں سے کہہ دیا کرتا تھا۔ وہ چھریرے جو والید سے کبھی نہ کہتا تھا اور ایک تھا۔ وہ چھریرے

سے جم آور چھوٹے سے قد کی تغیبی ۔ آور تھوڑے دِن میں میرا قد اِن کے لگ بھگ جا بہنچا ۔ اِس بِنے میرے دِل میں عُرکے فرق کا احماس کم ہوگیا ۔ اور وہ مجھے لینے برابر کی معلوم ہونے گئیں ۔ مجھے اِن کی پیاری صورت اور نعفے سنے ہاتھ پاول بہت ایتے گئے سے دو ایک نوارد کشمیری گھرانے کی تھیں ۔ جے اپنا وطن جھوڑے دو ایک نوارد کشمیری گھرانے کی تھیں ۔ جے اپنا وطن جھوڑے دو ایک گوری تھیں

میرے دؤسرے ہم راز والیرے ایک مُحرِر مُنشی مُبارک علی تھے۔ وہ بدایوں کے ایک آسؤدہ خاندان سے تھے کھٹلہ کی شورش بیں أن كا گھر أجر گیا۔ اور انگریزوں كی فوج سے إن کے خاندان کو قربیب قربیب ختم کردیا تھا اور وہ سب سے خفوعاً بیوں سے بڑی زمی سے بیش آتے تھے۔میرے بے ان کا وامن جانا بؤجما امن كا رفيكانا تفا- جب كبي أداس يا بريتان بونا إن ہی کے یاس پنجیا ان کی شاندار شفید ڈاڑھی دیکھ کریس بچین کی سادگی سے یہ سمجھتا تھا کہ یہ بُرانے وقوں کے آدمی بیش جنیں کئی گا کی بایش یادین وان کی گود میں بنیھ کر جیرت سے آکھیں پھیلائے میں اِن کی بے ننار کہا نیوں میں سے الف بیلی آور دؤسری کِتابوں کے قصے یا عصنۂ اور شھنۂ کے حالات سُنا کرنا تھا۔ منتی جی کا اِنتقال بہت برسوں بعد میری جوانی کے زمانے میں ، ٹوا۔ وہ مجھے اب یک بادبین اور اِن

کی یا د کو بیش دِل جان سے عن پیز رکھتا ہوئی د بینٹ جواہر لال ہُرؤ) ڈاکٹر شیر عالم جی شین

والبرء باپ عظمت : بران Sat. : 1. طيش يه غُصّه ظرافت يدل لكي منزاين مُحرّر ي مِلْف والا - وكيل كامنشي شورش بلوه بنگام نؤواردة نيانيا آيائوا نازِل ہونا ۽ أترنا ہم راز یادواں تحکم یا کیسی پرحکومت کرنا ۔ زور چلانا ورگزر عانی آسوده: مُطْنُ -

۲۲-کتاریاجاتے

رات کے بارہ نج ہاے وام! اب تو چھتریں کہیں بلٹے کی مگر ہیں وہی۔ رای ایٹا جان بڑتا ہے کہ رات بھر بنٹھے بیٹھے کے گی واسا پر اِن بچوں کو کیا کریں ؟ اِن کے سونے کے لیے تو المي كوني مخور شمكانا بونا جاسي لاو ایک کو ہیں دے دو واسا كب ك لا وك ربو م ؟ رامي جب یک ہوسکے۔ آخر کیا رکیا جائے واسا دو نج رات ہم سے تو اب یہ لؤنڈا بہیں سبھلتا تو لاؤ لسے مجھی دے دو لاحي تُم تو پھٹے کو پہلے سے ہی لیے ہو واسا رامي تم بھی تو تھک گئ ہوگی 119 بال ، بركيا كيا جائے راحي

یار بح ضع ذرا آگ جلانین تو چلم بیتیا واسا كيت جلاؤل ؟ رامي لاو بیوں کو مجھ دے دو واسا إِن كو بے كركيا كروگے ؟ دِيا بجھ كيا ، دِيا سلائ سيل رامي کئ، آیلے کھی گئے يراتما! پين كو تو ايئے ہى سے . في جا ہما ہے ـ واسا ہاں! پرکیا کیا جائے راقي یا کی جے صبی کیاں جارہے ہو؟ رامی بیل کو نا ند پر لگادول، آج کھیت جو تنا سے نا داسا پر ایک بیل سے کیا ہوگا رامی نہیں مکھوے بھی اس کا بیل مانگاہے واسان پر یہ دؤسروں کے بیل کے سمارے کیتی ہوچکی را می:-ہاں برکیّا کیا جائے وا سا سات یے قبع ابھی یہ بل بیل لے کر اتنے سویرے کیٹے اوٹے ؟ 63 كيا كرتاء ايك چوتفائ كهيت بلنا تفاكه صلع دار آ كيء واسا ير إن كا لكان نو دے چكے ين رامي

باں! پراکھوں سے کہا ہمار ندرانہ لاور داسا تو اِس سے پھونی کوری بھی نہیں راقي یبی تویں نے کہا تھا۔ بس انھوں نے کھیت سے داسا نيكال ويا بھر کیا رکیا جائے۔ رامي نو جے ون رامی کہا کیا جاجن سے ؟ وہ کہتے ہیں کہ جب تک پچھلا رو پیر واپس مذکرو کے داسا ہم ایک یائی اُوھار نہ دیں گے۔ اِن کے تو کل چار ،می روپے چا ہیے تھے اور انھیں رامی سب ملاکر پندرہ تین اٹھارہ روپے وے یکے بین یہ ہی بین نے بھی کہا پر وہ کھتے بین یہ سب داسا سؤو ہُوا ارے رام رے بڑا بے ایمان ہے راحي باں پر ہے بر اب تو یہ سوچٹ سے کہ کیا واسا کیا جائے گیارہ نے دِن كہا كيا زين وار نے ؟ رامي اُنھوں نے کہا کہ میں ریاست کے ملازموں کے خلاف واسا

```
ابک بات نه سنؤں گا۔
تو تُمْ سے یہ نہا ہم لگان دیتے ہیں ہم کو لیے
                                                     رامي
سے کھیت ہوتے سے مد روکا جائے۔ بنیں تو ہم بھوکے
                                      مر جایش کے
                                      سب کھ کہا
                                                     واسا
                                بھر وہ کیا ہولے ؟
                                                     رامي
اُنھوں نے رکھائی سے کہا۔ ضلع دار کا حق نہ دو گے تو وہ
                                                     واسا
                     تھیں کھیت میں گھنے نہ وے گا
         تو تُم نے کہا بنیں کھیت اِن کا بنیں ہمارا ہے
                                                     31
      میں زمیندارے لڑنے ہنیں اپنی بنیا کنانے گیا تھا
                                                     واسا
                         ارے تو تم نے کھے کہا بھی ؟
                                                     را في
   ہاں میں نے خوشامدے ہاتھ جوڑ کرسب کھے کہا تھا
                                                      داسا
                                                      رامي
اُنھوں نے کہا جب تم ضلع داروں ، کا زندوں کو خوش بنیں
                                                      داسا
  رکھو گے تو یہی ہوگا بھوکے موگے تو بجؤری ہے
                                 آخر کیا کیا جائے
                       باره بي ون
                        ا آے رؤیے مہاجن سے ؟
                                                     رامي
                                      ہاں کے آیا
                                                     داسا
```

كنا دِيا أس ك ؟ رامی دس رویے! واسا ایس دس روپے ۔ ارب چار چیزیں تیس، بتاجی تو مجھ سے رامی کے سے کر پورے بیاس رویے گلے بین اِن بی ير جاجن نے كہا يش وس ،ى ين لؤل كا واسا ہائے بھگوان میں کھ گئ رامي اب رو تی کیوں ہو۔ تونے ہی تو دِیا تھا واسا يريث نے تو اس ليے ايے آپ كو بجكايا تھا كہ مہاجن رافی کا جباب بچکا دوگے ۔ ضلع دار کو نذرانہ دوگے اور ایک بیل مول تو گے تو جار جاجن کو رے کر اس کا حاب بچکاریا ۔ وو داسا فِنلع وار کو دے دیئے اب چار ،ی روبے نیج پین ۔ مجھے ہنیں جا ہے متھارا روپیے تنم میرا گہنا لا دو۔ رامي ير اب جاجن كے پاس جاؤل تو وہ وُصكار وے گا۔ واسا تواب بیل کہاں سے آئے گا۔ ہائے کھبتی کھے ہوگی رامي كناكيا جائے؟ دؤسرے دِن دوپرکو کوں جی یہ چوری تم نے کی واروغ بنبر مالکِ

واروغه، أثم تو اس كام بين برايد بنين جان يرتع ؟ واسا بنین مالک واروغ بوتم کو بیٹے بٹھائے کیا سؤجی کہ جاجن کے گھر یس بھاند ہجور! اُکھوں نے ہماری ہریا کا سب گہنا یا تا لے لیا اور پیاس کے مال کے وس دیے تو تم ينيا ،ى كبول ؟ واروغه ي كرتا مالك، ضلع دار كو نذانه دينا تها داسا تو تم نے چاہا رویے بھی نے لو اور کھنے بھی پڑالو واروغ ہیں سرکار، ہریانے سب چیز بیل مول یسے کو دی تھی داسا رونے ملی ، بیل لاؤ بنیں تومیرا گہنا لاؤ۔ داروغه ارب بیوقون، تو اب تو نه زیور علے نه رویے سے اور نائل بِلا الركيم بلا تو مُفت كى جبل

(علی عبّاس تحبینی)

نذرایهٔ تا بھینٹ ضلع دار یا گانو کا کارِندہ جو تحقیبل وصول کرتا ہے

۲۵- بائیسکل

سرکتی ہؤئی سرسرات ہؤئ لچکتی ہونی سرسرات ہؤئ

كىيں كوندق أور ليكتى ہؤئ كىيں اچتى أور تِقركتى ہوئي

بجومون مين چاتى ساتى بنوتى

برأفت يحق بچاق بؤلي

کہیں طبعے ملتے جھجھکتی ہوئی کہیں جلتے چلتے اُچکتی ہوئی

ہیں بیل کے مُنہ پرچرافنی ہوئی ہیں میل سے آگے برطنی ہوئی

ہؤکورگوں میں بیمراق ہؤئ بینے کے موق لٹان ہؤئ

> ہواٹھنڈی ٹھنڈی چلاق ہونی طبیعت کے غنے کھلاتی ہوئی

جِهلكتي بهؤن جِهللاتي بهؤن

چىكتى بوئ جگان بوئ

طرارے مجھی بن کے بھرتی ہؤئی أجيلتى بؤلى جست كرتى بؤلى کیں جا کے رکتی اٹکتی ہوئی کسی جاچگتی مطکتی ہوئی زميس عيثى للتي بؤن ہوا میں اللّٰی میلٹی ہوئی كهير يُرت يُرت سنبهلتي ،ون كين ركة ركة بكتي بؤني جيتي، ويئتي، رينتي، ويُ كِمستني وعسلتي، أجشتي بولي سُلِهِ كُركِينِ بهر ألجهتي ، وفي ألم كركبيل يحفر تتلجفتي بؤني بهت بوطي برق سے نوك جمونك بس ابسائيكل إنى شهبازروك (عبُرانغفُورخان شهبان) بخوم يه بجير بحار برق يرتجلي آفت و بلا وتفواري ليوية خون

06

طراره م پؤکری

bi - 44

(عِصمت بْخِتانْ كا خط ولى سنابهان يؤرى كے نام)

(1)

۲۰ فروری ۱۸۲

۳- اندس کورٹ ۸- روڈ چرچ گیٹ بمبئی ہے

ولی صاحب۔ کچھ کام کچھ بے کاری کی فِکر۔ جینے ہی مُہلت طی فورً سودہ بھیجوں گی۔ بڑے چگر میں ہؤں ۔ کام ہے بھی اور ہنیں بھی۔ کچھ معلق سا معاملہ ہے۔ بیندرہ دِن کی مہلت مل جائے بس

والسلام عصمت بيغتا لي (فکر تونسوی کا خط عبراللہ ولی بخش قادری کے نام)

۱۸/۲۳ موتی نگر نئی د،ملی ع<u>ه</u>ا

العالى مالى مالى مالى مالى مالى مالى الم

یہ کیتی مسّرت کی بات ہے کہ میٹری بنیاری بیٹی رانی بھاٹیہ اؤر عزیر پرکاش آ ہنوجہ زِندگی کے ایک خواب صورت موٹر پراکھٹے ہو رہے بیش ۔ بہاں سے وہ ایک نئی منزل کی طرف آ گے برهیں گے ایک دؤسرے کا ہاتھ تھامے ہؤئے۔

اِس موڈ پر ہم سب اکھے ہوکر ان دونوں کو آشیرواد دیں عزیز برکاش اور اِس کے سمبندھی سااستمبر شام کو آگھ بجے آبیش گے

آبیخ

ہم ان کا پیار بھرا سواگت کریں نو ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ آپ آرہے بین ! فکر تولنوی (مم) (میرانفقار شربولی کا خط لیے نناگرد ہرنٹر کے نام) انتا دوں کا مدرسہ جامِعنگرنتی والی-۲۵ ١١١٠ ايريل الحافية

خوش رہو

ٹرنینگ کالج چھوڑے ایک سال ہوگیاہے: کہنے کیا حال ہے؟ جامعہ یا و آئ ہے ؟ غالب کے شعر بڑے شوق سے کھے تھے۔ کبھی گنگناتے بھی ہو ؟ کبھی مجھی تھوڑے سے ساتھی جاعت یں گر بڑ کرتے بین یا بے توجہ رہتے بین توین چیب ، مو جاتا بؤل بجب سُكُون كى حالت مين سوجيًا بنون تو ايبا معلوم بوتابية كرسب شاكرد اجّے ين - ہزند! جب شاكردول كے الجے مفايين و کمجتا ہؤں تو جی خوش ہوجاتا ہے ۔ آب بھی اپنی جماعت کو ایسا ہی یا بین گے۔ مگر شرط یہ سے کہ میری طرح صبرے کام لیں۔ اوْر مُناسِعَ لِين مدرسے بيں بُرگھ بجؤل بُھلواري لگاني بي ؟ الله كُرُّار بنايا بي -جب آپ سب لي إن مررس كو گُرُار بنایئ گے تو سال دیش گُرار بن جائے گا۔ جی ہاں جیالات کے اعتبار سے بھی

میں نے الودائی جلنے کے دن جاعت میں یہ شعب

لكحوايا تضا

اب توجاتے ہیں جامعہ سے تند وکھر ملیں گے اگر خُدا لایا ہاں بھانی سلتے رہنا

تھارا بھلا کی چاہنے والا عبدُ الغفّار مُدہو کی

(M)

ٹیلیفون ۱۹۱۰سے

نار کا پته اِکادی

مكتبه جامعه لميثير

رجِطررة أفن: جامع نكرنى والى ٢٥

حوالر تمير: ١١٧٢٧١١

تاريخ - وابريل كنه

ىنبرخرىدارى: ۲۱۱

مخرمی شلیم

آپ کی مُدَتِ خریداری اپریل کے پرچ کے سامق خم ہورہی بیت مجھے آپ کی علم دوی سے آمید بیت کہ آپ برستور کاب نما کی خریداری فواتے رہیں گے۔ براہ کرم مبلغ ۳ رؤپ چندہ سال آئیندہ بزریع می آرڈر ارسال فراکر ممئون فرمایت اگر تھوا نخواست کسی وجہ بزریع می آرڈر ارسال فراکر ممئون فرمایت آگر تھوا نخواست کسی وجہ سے آپ کو پرچ کی خریداری منظور نہیں ہے تو براہ کرم ۳۰ اپریل سے آپ کو پرچ کی خریداری منظور نہیں ہے آگر اِس عرصہ میں آپ کا کوئی بہ اِس کی اِطلاع دے دیجے۔ اگر اِس عرصہ میں آپ کا کوئی جواب نہ آیا تو اِس کو رضامندی پرمحمول کرکے می کا پرچ بزریع برریع برا

وی پی مالیتی ہم روپے ، بینے ارسالِ خدمت کیا جائےگا اُمید ہے کہ آپ لیے وصول فرمایش کے اور دفتر کو زیر بار ہونے نہ دیں گے یشکریہ جائے میں منتظر

مينجر

ولی تناہجاں پوری

حواله يه بتا. نشان

برستورة عادت كمطابق بيكط اندازے

براه کرم = جربان زماکه

فدانخواسة وقدا دكرك كايما بو

محول كرنا ويحكان كرنا

إرسال كرناء روانه كرنا بجيبا

زبر بار كرنا يد بوجه والناديه بوجه روب يشيكا بويا احمان كا

منتظرة إتظار كرنے والا

٢٠-خطك القاب وأداب

آخری <u>ں لکھنے والے ک</u> نام سے اؤ پر	اگرآپ وْرت كولكييس	اگرآپمردکو لیکھیں	
وغیبرہ یا تنھارا بھلائ چاہنے والا	/ 41	عزیزی (یااس کے ساتھ نام). دُعا یا آشیر وار یا خوشس رہو	
آپ کا ا آپ کی	نام صاحبه پناری نیم بیلی سلام آلی نمست	مهای صاحب یا محتی یا نام صاحب سلام یا نست	۲ برا بروالوں کے بیاب
نیاز مسند	مُحت رمه با اقمی جان یا آباجان ایشی دیدی وغیرہ ساد م یا آداب یا نستے	ابًا جان يا	۳ بروں کے پیے

4 1

القاب وآواب یہ القاب اور اواب القاب یہ جے خط لکھا جا سے اس کی تعرفیت بین خط شروع کرلے کا ایک یا کئی لفظ آواب یہ برقت کے لفظ جو خطوں بیں القاب کے بعد ککھے جاتے بین عزیزی یہ بیرے عزیز - میرے بنارے عزیزہ یہ بنا ری مُحرّمہ یہ عرّت والی بُرگ عورت وعاگو یہ وَعا کرلے والا

٢٠٠ وعوث تامير

(1)

میری لرا کی صفیہ سلم اکا نِکاح جناب ففل الرحمٰن فاں صاحب
رئیس شاہجاں پؤرکے صاحبزا دہ کا گل الرحمٰن خال سلمۂ سے قرار پا یا ہے اس
تقریب بیں آپ کی شرکت سے مجھے ولی خوشی ہوگی
"ارشی ۱۰ جنوری ملاف المیم
وقت کاح میں جھے بیام
وقت طعام ۔ ، بیا شام

(Y)

نینځ الجامِعه اورمجلس تعلیمی جامِعه مِبَهه اِسلامِیه کی

در خواست ہے کہ آپ ، سراکتو بر نے فلے کو ساڑھ چار ہے جلسۂ تقبیم اسناد میں شرکت فرمائیں

جناب دی . وی گری صدر جمہؤریہ ہند نارِع التّحصیل طلبارے خطاب فرمایش سے سلمها عام طور بربر برب اپنے جھوٹوں کو عثرت کنام کے بعد بطور ماکھتے بن ۔
سلمها عام طور پربڑے اپنے جھوٹوں امر درے نام کے بعد دُعاک طور پر ریکھتے بن ۔
طعام یہ کھانا
بیٹن الجامعہ وائس چانسلر
جلستا تقییم اسنا دیا کا نورکبتن
صدر جمور بیر بہند یہ پیسیڈنٹ اِنڈین دیبیبک
فارغ التحقیل طلبار یو کم جانبل کرے سے فارغ ہونے والے ارجے لڑکیاں ۔
خطاب فرمانا یا گفتاؤ کرنا ۔ ایڈریس بردینا
میر جامعہ یہ جانسلر
میر جامعہ یہ جانسلر
میر جامعہ یہ جانسلر

٨- کائيات

ونها عجب بازارے جھے جنسیاں کی سات ہے نکی کا برار نیک ہے برے بری کی بات لے میوں کھلا، میوہ ملے بھیل پیول سے اس ا ارام دے ارام لے وکھ در دوے آ فات لے کایگ بنیں کر تھا ہے بیاں دن کومے اور ان کے کیا خؤب سودانقدس ایس مائقد دے اُس مائف کے جو اوْر کی بستی رکھے،اس کابھی بشا ہے بہرا جواؤرك مارك جُيرى إس كربى لكناح جُمِرا جو افرکی توری دھری اس کاکھی ٹوٹے ہے دھرا جوا وُرکی چینے بری اس کا بھی ہونا ہے ، رُا کلنجگ نہیں کرجگ ہے یہ بال دن کومے اورات لے کیا خوب و دانقرے اس باتھ دے اس باتھ لے جوجا ہے مے لیاں گوری سبجنس یان نبارہے

لیا حوب سودالقد ہے اس کا حوب سودالقد ہے اس بائی جو چا ہے نے چل اِس گھڑی سب جنس یاں نیار ہے ۔ آرام میں آرام ہے ، آزار آمیں آزار ہے ۔ وُنیا نہ جان اس کو میاں دریا کی یہ منجر مقار ہے ۔ اوروں کا بیڑا پار کر تیرا بھی میڑا پار ہے ۔ کائبگ ہیں کر جگ ہے ، یاں دِن کوف اورات لے کیا خوب مورات لے کیا خوب مورا نفذ ہے اس ہا تھ دے اس ہا تھ لے

تواور کی تعربی کرجھ کو شن خوان سط کر مشکل آساں اور کی تھ کو بھی آسان سط تو اور کو بھی جھان سط تو اور کی تھ کو بھی جھان سطے دون کھلا رون کی سطے ، پان پلا بیان سطے

کلنگ انس کر گیا ہے میاں دِن کوف اورات لے

كاخوب مودانقرب إس مائة في أس مائفك

یان نہرے تو زہرے، شکریں شکر ویکھ لے نیکوں کو بیکی کا مزہ ، مؤذی کو ٹکر دیکھ لے موق وی کو ٹکر دیکھ لے موق دیکھ لے گرئچھ کے گرئچھ کے اور نہیں تو تو بھی کر کر دیکھ لے گرئچھ کے یہ ور نہیں تو تو بھی کر کر دیکھ لے

کائجگ بہبی کرجگ ہے نہ یال دِن کو دے اورات لے کیا خوب موا نقرب اِس باعقد دے اُس ہاعقد لے

رهنس بر چیزر سودا مورد سر کرد

اً فات م آفت کی جمع ۔ بلایش ازار م دکھ ۔ روگ

ثناخواني ترييارنا

با ور يين بجروسا

۲۹- عُقابِ اوْرِمَرْ عَي

ایک عقاب بادلوں کی چا دروں کو چیز اہوا کوہ قاف کی چوٹیوں پر ٹیٹنے گیا

ر ٹیٹنے اور اُن پر چکر لگا کرایک صدیوں پڑانے دیو دارے درخت پر بیٹے گیا

وہاں سے جو منظر دِکھائی دے رہا تھا اِس کی خوب صورت بیں وہ محو ہوگیا۔

اُسے ایبا معلوم ہوتا تھا کہ و نیا ایک بسرے سے ذوسرے بسرے تک تصویر کی

طرح سامنے گھلی ہوئی رکھی ہے کہیں پر دریا میدانوں بیں چکر لگاتے ہوئے

ہرد دے بین رہیں برجھیلیں اور کہیں پر درختوں کے گئے بھولوں سے لدے

ہوئے بہار کی پونناک میں دونن افر وزبین ۔ کہیں پر سمندر خفگی سے اپنے

ماشھ پر بل دلالے ہوئے کوتے کی طرح کالا ہورہا ہے

"ا ہے قُدا" عُقاب نے اُسان کی طرف دیکھ کر کہا" میں تیراکہاں ایک تکراواکرؤں، تؤنے مُجھے اُریٹ کی ایسی طاقت دی بیٹے کہ وُنیا میں کوئی بنیں ہے جہاں میں بہنے نہ سکؤں۔ مین فِطرت کے منظروں کا کطف اُنیں جگہ بنیلے کر اُٹھا سکتا ہؤں جہاں کسی اور کی بہنے نہیں '

ایک مکولی ایک درخت کی شاخ سے بول اُٹھی می تو آ بزر کیوں ایٹ میٹر تو آ بزر کیوں ایٹ مُنہ میاں مِٹھو بتا ہے کیا میں شجھ سے کچھ بنی ہوں یہ میوں کیا میں شجھ سے کچھ بنیکی ہوں یہ میاں میں میاں کے بیاروں طرف میاں کے بیاروں طرف

شاخوں پر ابنا جالا نن رکھا تھا اور لُسے ابنا گھنا بنا رہی تھی کہ گویا سؤدج تک کو عقاب کی نظر آن سے بھیا دے گی

> کڑی نے جواب دیا ہنیں ایسا تو ہنیں ہے: " 'پھر تو یہاں کیئے آگئ ؟"

اِت میں ایک طرف ہے ہوا کا جھونکا آیا ا وُر اَس نے مکڑی کو اُڑا کر زمین پر گرا دیا

میرا نیال ہے اور آب کو بھی تھے۔ انفاق بوگا کہ و نیا بیں ہزاروں لوگ بین جو اِس مکر ای سے بہت مثابہ بین لیے لوگ بغیر کسی قابلیت اور مخنت کے کسی بڑے آدی کی دم بین لاک کر کسی باندی بر بین ہے جانے بین اور پھر ایسا سینہ بھلا کر جاتے بین گویا

فُدُانے اِن کو عقابوں کی سی تُوت بخشی ہے۔ مگر صرورت صرف اِس کی ہے۔ مگر صرورت صرف اِس کی ہے۔ مگر صرورت صرف اِس ک ہے کہ کو بی اِن کو درا سا بھونک وے اور وہ لینے جامے سیت بھے۔ زین بر بیٹنج جاتے ہیں

(رفوی کهان مترجم پروفیسرمحدمجیب)

صدلول = سينكر ول منظر یه نظاره مح بوناء كسى خيال بس كلوعانا رونن افروز برونق برهانے والا خفلي = غصة سربلندی : عرّت - بران وصلم يستمت گزارش و عن د در خواست إِنَّفَا ق = ايكاء أيك رائمة بونا متنابرة مانند جامه : پوشاک - کیرے عزيز= ينايا تهلت: فرصت معلق لظاتروا والسلام = ادرسلام

منتخباشعار

ا۳۔ میرتقی میر

آگے آگ ویکھے، موتا ہے کیا یعنی غافِل ہم چلے سونا ہے کیا نجم خواہش دِل میں تؤربوتا ہے کیا داغ چھانی کے عبث دھوتا ہے کیا ابندائے میں جے مووتا ہے کیا قافلے میں صبح کے اکستوریت سبز ہوتی ہی بنیں یہ سرزمیں یہ نشان عشق پین جاتے بنیں

مِیاں خوش رہو ہم وُعا کر چلے
ہراک چیزے دِل اُٹھا کر چلے
ہمیں آپ سے بھی جُدا کر چلے
نظر میں سبھوں کی فَدا کر چلے
نظر میں مُم آئے کھے کیا کر چلے
جہاں میں مُم آئے کھے کیا کر چلے

فیران آئ صدا کر پط وہ کیا چیز ہے آہ جس کے لیے وکھائ ویئے یوں کربے تود کیا پرستش کی یاں تک کہ اُت بھی اکس کیا جو یؤچھے کوئی م سیر

جوخل شنہ ہوتی تو کا بیش مذہوتی ہیں جی سے مارا تری آرزؤ نے دہما یئ نتجے میری باتیں وگر منہ رکھی وحوم شہروں بیں اِس گُفتگو نے دہما یئ خال میر حص تری بات رکھی یہ شجھے تبیر سمجھا ہے یاں کم کوئے نے

وگرمنہ ورہ ۔ نہیں تو سبز ہونا ۽ سربز ہونا ۔ ہری ہونا بے خود ۽ ست - آپے سے اہر عبرا ء الگ ترخم ہے بہتے عیت ہے بے فائدہ صدا ہے آواز بہرستش ہے یؤبا۔ خدمت کابش ہے گھا ہے۔ تہلاین

٢٧ر مرزااسرالترخان غالب

اگراؤر جیتے رہتے یہی اِنتظار ہونا کو خوشی سے مرنہ جانے اگر اعتبار ہوتا کوئی چارہ ساز ہونا کوئی عظم گسار ہونا زکھی جازہ اُٹھتا نہ کہیں مرار ہوتا شجھے ہم ولی سمجھتے جو نہ باوہ خوار ہوتا

یہ نے تھی ہماری قِسمت کروسال یار ہوتا رترے وعدے پرجے ہم توبیجان جھوٹ جانا پرکہاں کی دوستی ہے کرہے: بین سُتناصح ہوئے ہم جومر کے رُسواہوئے کیون خرق میا پرسائل تھوٹ نابی نالیت

کوئی صؤرت نظر رہیں آق

نیند کیوں دات بھر نہیں آق

اب کی بات پر نہیں آق

ورد کیا بات کر نہیں آق

گی ہماری خبر نہیں آق

مؤت آق ہے پر نہیں آق

مؤت آق ہے پر نہیں آق

کوئی آمید بر نہیں آتی موت کا ایک وِن مُعیّن ہے موت کا ایک وِن مُعیّن ہے آگے آتی تھی حالِ دِل پہ ہنسی ہے آگے آتی تھی ایشی ہی بات جو چُیپہول ہم وہاں ییش جہاں ہے ہم کو بھی مرتے بیش آرزؤ میں مرین کی کیے کی مُن سے جاؤگے غالِت

عزت ہونا ہے دوبنا مسائل ہے مسلے۔ سوال ولی ہے رشی بمنی برآنا ہے باؤرا ہونا وصال بے میں قات ناصح بے نصیحت کرنے والا چارہ ساز بے کام بنائے والا غم گسار نے ہم درو

سه واب مرزاخال وآغ

بہت دیر کی جہراں آتے آتے وہاں جاتے جاتے یہاں آتے آتے وہیں دہ گئ در سیاں آتے آتے در سیاں آتے آتے کہ آتے ہے۔ اُردؤ زباں آتے آتے کہ آتے اُردؤ زباں آتے آتے

دجانا کر ڈنیا سے جاتا ہے کوئی نتیجہ نہ نکلا ، تھے سب بیای شنانے کے نابل جو تھی بات اُن کو کسی نے بھے اُن کو اُبھارا تو ہوتا ہنیں کھیل نے واقع ! یاروں سے کہ دو

کیے کہتے جُھے بُرا کیے
یہ سنہ کیے کہ مُدّعا کمیے
کہنے والوں کوخیر کیا کہتے
آپ اپنا تو مدّعا کہیے
ہے کوئی اور دؤسر کیے

ناروائي نا سررا بكي آپاب برائن نه كفلوائن تُحه كواچّها كها، كركرك برك مطلب كياغ فن طلب آپ كاخير خواه مير سبوا

اُن سے ہونا ہے سامنا جس دِن دور ، ہی سے سلام ہوتا ہے ، واتع کا نام سُن کے وہ اولے آدمی کا یہ نام ہوتا ہے

یثامی : بیام لے جانے والا کسی کی بات بہنجائے والا ناسزا : ناواجب نامناسب بے جا ورمیاں = بیج بس ناروا : نامناسب بے جا

۱۳۷ - سيد اكبرنين اكبراله آبا دى

مگر افسوس اب وہ جی ہی ہنیں کوئی ایشی شال تھی ہی تہیں بولے ہنٹس کے وہاً دمی ہی ہنیں چاہتا تھا بہت سی باتوں کو اس مصیبت میں دِل سے کبا کہتا پوچھا ، اکبر ہے آدمی کبشا

کیوں سول سران کا آناروکی اسٹے ہوئیں اس بیس ہے اک بات آنری شفاہویانہ ہو مولوی ساحب نے چھوڑیں گے، فراگونی و کھیر ہی لیں کے پولس والے سزاہویانہ ہو ممبری سے آب برتو وارنش ہوجائے گی قوم کی حالت میں کچھایس سے جلاہویا نہو

جوافسر کے بس وہ جھٹ کیجے جوماحب کھلا بُن وہ جبٹ کیجے کہیں مفلوں کو نہ پٹ کیجے نوچہ کے اور نہ بٹ کیجے اور نہ بٹ کیجے

من کچھ انتظار گرط یکھے کہاں کا علال اور کیٹیا حرام میکھاتے ہیں تقلیدانگلش جوآپ بہت طوق انگر مربغے کا ہے اجل آئی اکبر گیا ونت بحث

مفلس یه غربیب ا جل یه مؤت حرام یه ناجائز نقلبد یه نقل ییردی ہم نتیں یہ ساتھ بیٹھے والا دوست یشفا یہ روشنی تندر ستی بیاری سے اجھا ہونا جلا یہ روشنی رچک حلال یہ جائز

هساء شؤكت على خار فان بدايون

وشمن كا نفييب چاہنا ہؤں كھرا در قريب چاہنا ہؤں ديدار جيب چاہنا ہؤں فان وہ نصيب چاہنا ہؤں تیکین عبیب جاہتا ہٹوں تُم، دِل بن بھی رہ کے دورسے ہو انجسام بخبر ، ہو نظر کا غم کو جو خوشی بناکے بھورا

موت مِلْ تومُفْت داول بستی کی کیام تی ہے م جو اُجرِث اور کچر رز بے دِل وہ زرال بتی ہے م آگے مرضی گاہک کی اِن داموں توسستی ہے م دِل پیگھٹا کی چھائی ہے مذہر سنی ہے م بتی بناکھیل بہنی، بنتے بنتے بستی ہے م بائے وہ آنکھ اب یان کی دولؤندوں کو ترستی ہو ونیا میری بلاجان بہنگی ہے یاستی ہے آبادی بھی دیکھی ہے، ویرائے بھی دیکھے بیش جان سے نے بک جاتی ہے ایک نظر کے برلے میں آنٹو تھے سوئٹ ہوئے، بی ہے کرامٹلا آتا ہے ول کا آبرونا ہمل ہی بنا سہل ہمیں نظایم فاتن جس میں آنٹوکیا، ول کے افوکا کال شمصا

زِنرگی کابے کوہے ، نواب ہے دیوانے کا زِنرگی نام ہے مُرمُر کے جے جے جانے کا اک مُعّاج سجنے کا نہ سجھانے کا برنفس عُر گرشنہ کی ہے بیت فاکن

میت: مُرده لاش گُرشة ؛ گُرزی بؤگی هبیب: دوست

تسكين و دُهارس وطبينان الله الله و دُنها و دُهارس وطبينان الله الله و دُنها و دُهارس وطبينان الله و دُنها و دُهار و دُنها و دُهار و دُنها و دُهار و د

٣٧٠ على سيكندر جكر مرادآباوي

لاله بلایش ایک نشین لیکن ابنا اسب دامن بش وسی اب ناعقل کانجین نام بڑے افر خصور شے درش سابہ ہے کیکن رفش رشون کوئی پہ کہ نے گکشن گکشن پھؤل کھے ہیں گلشن گکشن فریب بیتیں، صدیاں گزییں کام ادھیل اور آزادی شخصے لیکن دُھندل دُھندل

د أنسو بهاك كوجى چاہا ہے بيٹ ديں زمائے كوجی چاہتا ہے مگر بحول جانے كوجی چاہتا ہے بتر ناز آٹھانے كوجی چاہتا ہے غ بھی جس کو رأسس نہ آئے بھائے، لیکن راہ نہ پائے دفت اگر تسکیبن نہ پائے گئت ہائ بائ فی مستمن نے گئے کہ کھر سنے کی جگر سنے کی جگر رہنے کی ج

ہانے وہ کبنوں کر دِل بہلائے دِل پر کچھ ابنیا و تنت پڑائے جھو ٹی ہے ہر ایک مسرّت رفرح یہ آتما مسرت یہ خوشی مسرت یہ خوشی معلمت رئیک صلاح نیک نجور بیک صلاح

١١٠ ركوين سبائ فراق كوركيورى

غ ہے چگے کریغ ہے بھو کو کینوں غم سے بنجات ہوگئ ہے ممرت سے خب ربی نہ و گئ ہے ممرت سے خب ربی نہ و گئ ہے ممرت سے خب ربی نہ و گئ ہے اس دور بس زِنرگ بہت کی اس دور بس زِنرگ بہت کی اس بیار کی دات ہو گئ ہے جی بینی ہوئی از ک مجتب کیلا ہؤں تو ات ہوگئ ہے ۔

کبھی خوش کرگئ مجھ کو تری یاد کبھی آنکھوں ہیں آننوآ گیا ہے شِکا بت تیری دِل سے کرتے کرتے ہے اچانک پنار تجھ بر آگیا ہے ' مجت یں فِرَاق اِنا مَعْ مُحر نمانے میں بہی ہوتا رہا ہے '

بنجات به محلیا دور یان بنسر یا انسان

इमला का तरीका

उर्दू श्रुत लेखन में दो बातें हमारे सामने त्राती हैं।

- किसी शब्द के लिखने में कौन सा अन्तर आधा और कौन सा पूरा लिखें।
- २. कोन से यत्तर मिला मिला कर लिर्वे यौर कोन से यलग यलग।

इसके लिखने का एक फारम्ला बनाया गया है। यह यह कि यत्तरों के दो खानदान बना दिये गये हैं। एक को बड़ा खानदान कह लीजिय दूसरे को छोटा। बड़े खानदान की दो यादतें याद रिखये। जो दो यादतें इस खानदान की हैं उनका उलट छोटे खानदान की दो यादतें समिमये।

बड़े ख़ानदान की दो यादतें यह हैं:

- शब्दो में यह पूरे-पूरे लिखे जाते हैं क्योंकि इनके दो रूप नहीं हैं।
- २. दूसरी बादत यह है कि यह दायें बोर दूसरों से मिलते हैं बोर बायें बोर नहीं मिलते हैं। जैसे:

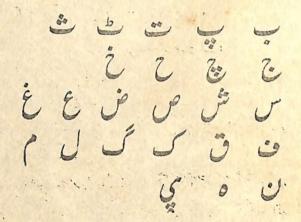
छोटे ख़ानदान की दो यादनें इनके उलट हैं:

- १ शब्द के लिखने में इनके याथे रूप (मिरे) लिखे जाते हैं।
- २. दूसरी चादत यह है कि यह मिला मिला कर लिखे जाते हैं लेकिन चन्त में चाये तो पूरे ही लिखे जाते हैं। जैसे:

इमला का खानेदान

खानदान नं० १ (पूरे लिखे जाने वाले अक्षर)

बानदान नं० २ (ग्राधे रूप में लिखे जाने वाले ग्रक्षर)



इत्यादि किः कि

अब रह गए ६२ ६१ इत्यादि अर्थात दो आँखों वाले अक्षर । इमला लिखने में इनका सिद्धान्त वही है जो इन के मूल अक्षरों का है। जैसे:

يمكت برط ادهر سيمل

लेकिन ७ — ७ पूरे लिखें जाते हैं और इन के दोनों ओर अक्षर मिलते हैं। जैसे:

مطافر مطاؤم

خطركا بت أرد وكورك

ا. جا بعد رتبیہ إسلامیہ جا بعد نگرنٹی دہلی کے جشن زریں رخاف کے مؤقع پراس کورس کے انتظام کی ابتدا کی گئی ہے:

۲- اس کورس کا مقصد مختلف زبانوں کے ذریعے خط کتابت کے سہارے آردؤ کی ابتدائی تعلیم دینا ہے

م. توقع كى جاتى ب كرسيكيف والا عام فهم أردؤ بول سكتا بو اور سجه سكتا بو-

م سيكھنے والے كي فرورى ب كو ده كوئل ايك زبان برط هسكتا مو-

۵۔ فی الحال جندی اور کے ذریع تعلیم دینے کا اِنتظام کیا گیا ہے۔

اس ك نصاب ك مُطابق كنابين نيار كي كي بين، شركت ك تواعديد بين :

قواعرتبركت

ا- جولوگ جمارے دفترے خطاکتا بت کے ذریعے ربط قائم رکھ گرتعلیم پانا چاہیں دہ ہمارے

 با قاعدہ زکن رطا ب علم) کہلائیں گے۔

انسے اراکین کو داخلہ فارم بھرنے کے بعد اس نصاب دکورس ، کی کتا ہیں ایک ایک کر گے
 مفت دی جانیں گی ۔ اس تعلیم کی فیس بھی نہیں ہے لیکن پورے کورس کی ڈاک اور
 کتا ہیں بھیجنے کا خرج دو روپے ہے جو پوسٹل ارڈر یا منی آرڈر کے ذریعے آنا چا ہیے۔

١٠ خط يكفة وقت داخد تمبركا حواله ديا كيجي

ہو لوگ ہارے دفترے ربط قائم کے بغیرہماری کتابوں ہے استفادہ گرنا چاہیں
 تو وہ مکتبہ جا بعد لمیٹ د جاہد گرنی د بی دی ہے تقررہ تیرت پریکتا ہیں حاصل کر کے بین۔

۵۔ فصاب تعلیم اور داخل فارم حاصل کرنے کا پتہ یہ ہے :

ناظم خطاکتابت اُرد فرگورس مامعه نمیداسلامیه جامعه گرننی دباخ خطرکتابت أردؤ كورس كى

ووسری کاب

رمعيار ٢ ثا ٢ جاءت

مجلسرادارت

پروفیسر محمد مجیب عبرالله ولی مخش قادری محمد ذاکر عبرالغفار مرمونی